अष्टादशभुजा दुर्गा

सर्वथा शुद्ध

श्री भवानीसहस्रनाम

स्तुतिः, नामावली

(हवन करने की विधि सहित)

श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रम् तथा

श्री गौरीस्तुतिः

—०—

संकलनकर्त्ता

प्रेमनाथ साधु, एम० ए०

श्याम लाल वातल, एल० एल० एम०

संशोधनकर्त्ता—

डा० बलजिन्नाथ पण्डितः

एम० ए०, एम० ओ० एल० पी० एच० डी०

सर्वथा शुद्ध

श्री भवानीसहस्रनामस्तुतिः

मूल पाठ, श्री भवानीसहस्रनामस्वाहाकारः
श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रम् श्री गौरस्तुतिः
तथा हवन करने की विधि

संकलनकर्त्ता
प्रेमनाथ साधु, एम० ए०
श्याम लाल वातल, एल० एल० एम०

संशोधनकर्त्ता
डा० बलजिन्नाथ पण्डितः
एम० ए०, एम० ओ० एल० पी० एच० डी०

प्रकाशक
प्रेम नाथ साधू,
डी-४४, पम्पोश एन्क्लेव (ग्रेटर कैलास I),
नई दिल्ली—११००४८.

प्रथम आवृत्ति १००० प्रतियां

अप्रैल १९९२ ई०

पुस्तक प्राप्ति स्थान

(i) प्रकाशक
(ii) श्री श्याम लाल वातल
ए—१२, पम्पोश एन्क्लेव (ग्रेटर कैलाश I)
नई दिल्ली—११००४८

विषय-सूची

प्रस्तावना

१९८२ ई० में हमने श्री भवानीसहस्रनामस्तुतिः और नामावली मोटे अक्षरों में छपवाकर प्रकाशित की थी। उस प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य यह था, कि नामावली, जो अप्राप्य थी, जनता को प्राप्त हो और हिन्दी का थोड़ा बहुत ज्ञान रखने वाले भी आसानी से इस दिव्य स्तुति और नामावली को प्रयोग में ला सकें। इस उद्देश्य की उस प्रकाशन से पूर्ति तो हुई, परन्तु, दैववशात्, सावधानी बरतने पर भी कुछ मौलिक कुछ व्याकरणिक और कुछ छपाई की त्रुटियां रह गईं, जिसका हमें बहुत खेद है।

२. दस साल के लम्बे समय में सारी त्रुटियों को शुद्ध करने का प्रयास जारी रहा। इसके लिए हमारा मूल आधार महामाहेश्वराचार्यवर्य श्री साहिब कौल सिद्ध का देवी नामविलास वाला ग्रंथ रहा। यह ग्रन्थ जम्मू कश्मीर के रिसर्च डिपार्टमेन्ट ने १९४२ ई० में प्रकाशित किया था। इस ग्रन्थ की एक प्रति हमें श्री राधाकृष्ण कौल (कोठा), पम्पोश एन्क्लेव, के सौजन्य से प्राप्त हुई। हम उसके आभारी हैं।

३. उपर्युक्त ग्रन्थ में श्री साहिब कौल ने माता भवानी के प्रत्येक दिव्य नाम पर एक एक और अन्तिम (हजारवें) दिव्य नाम पर दो संस्कृत श्लोक रचे हैं। ऐसा करते करते एक हजार दिव्य नामों पर एक हजार एक श्लोक रचे हैं। इसी ग्रन्थ के आधार पर मुख्यतः श्री भवानीसहस्रनामस्तुति को शुद्ध किया गया है।

४. नामावली को भी उपर्युक्त ग्रन्थ के आधार पर ही शुद्ध करने का प्रयास किया गया परन्तु कहीं-कहीं कठिनाई का सामना करना पड़ा। वह कठिनाइयां भी माता भवानी की कृपा से महाप्राज्ञ डा० बलजिन्नाथ पण्डितः एम. ए., एम. ओ एल., पी. एच. डी, शैव शास्त्र प्रवीण के माध्यम से दूर हुईं और यह शुद्ध संस्करण प्रकाशित होना सम्भव हुआ। हम डा० पण्डित के आभारी हैं।

५. स्तोत्र और नामावली में केवल एक ही स्थान पर उपर्युक्त ग्रन्थ से अतिक्रमण किया गया और वह है ६७० वां दिव्य नाम। हमने 'हिंसा' के स्थान पर 'हँसः' ज्यादा उपयुक्त समझा। सोऽहं का तांत्रिक रूप हँसः है। समान-ध्वनि-आरम्भ शब्द (Alliteration) और छन्द को भी दृष्टि में रखते हुए हँसः के दिव्य नाम का ही हमने चयन

किया। इसी प्रकार हमारा कई और नामों पर वैमत्य रहा और उपर्युक्त ग्रन्थ में प्रयोग नामों का अतिक्रमण करना चाहते थे परन्तु ऐसे सिद्ध महापुरुष के द्वारा प्रयोग किए गए नामों को ही हमने भी अन्ततोगत्वा अपनाने का निर्णय ले लिया। प्राप्य प्रकाशनों में चतुर्थ्यन्त बहुधा अशुद्ध दिया गया है। इस ग्रन्थ में वह सब अशुद्धियाँ डा० पण्डितः की कृपा से ठीक कर दी गई हैं।

६. इस संस्करण में पहले श्री भवानीसहस्रनामस्तुतिः की अपनी भूमिका, फिर मुख्य स्तुति, उसके पश्चात् नामावली और अन्त में इन्द्राक्षीस्तोत्र और गौरीस्तुति दी गई है। दो प्रकार के मोटे अक्षरों में इन्हें छापा गया है ताकि वृद्ध और हिन्दी का थोड़ा बहुत ज्ञान रखने वाले भी इसे आसानी से पढ़ सकें।

७. शक्ति की आराधना स्वतः सिद्ध है। जगत में साधना ही आराधना के रूप में अभिव्यक्त होतो है। ज्ञान क्रिया आदि इसके विविध रूप हैं। विभिन्न निदर्शनों के द्वारा ये सारे साधन के रूप में श्रीभवानीसहस्रनास्तोत्र में वर्णित है। तत्त्वतः देवी भगवतो सच्चिदानन्दमयी हैं। देवी भगवती के माध्यम से इस तत्त्व की निष्ठा को ग्रहण करने पर लक्ष्य की पूर्ति होती है। इस स्तोत्र में स्थान-स्थान पर देवो के विविध रूपों

और उसकी आराधना का विवरण उपलब्ध होता है। महान तप, व्रत, तीर्थ, हवन, दान आदि करने पर भी मनुष्यों को जो फल दुर्लभ है, श्री भवानीसहस्रनाम का भक्तिपूर्वक पठन-पाठन, श्रवण मनन करने से वह फल सुलभ हो जाता है, अनेकों उत्पात और भयंकर रोग शान्त हो जाते हैं तथा चतुर्वर्ग फल-प्राप्ति-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

श्री भवानीसहस्रनामस्तुतिः का जो नित्य पाठ करते हैं वे पहले भूमिका पढ़ें फिर मूल स्तोत्र का पाठ करें। अन्त में इन्द्राक्षीस्तोत्र और गौरीस्तुति से अपने पाठ को सम्पूर्ण कर सकते हैं अथवा जैसे उनका अपना नियम हो।

९. माता भवानी का जब हवन करना हो तो पहले भूमिका पढ़ें और अग्निकुण्ड में पुष्पों की वर्षा करते जाएँ। फिर पृष्ठ संख्या ९,१० पर 'अस्य श्री भवानी नामसहस्र-स्तवराजस्य, महादेवऋषि,......होमे विनियोगः' से तर्पण करें।

तर्पण करने की विधि किसी गिलास या कमंडल में पानी लेकर या पानी, दूध, दही मिला कर दाएँ हाथ की खुली हथेली पर ऊपर का मन्त्र पढ़ते हुए डालते जाएँ।

तर्पण के पश्चात करन्यास और अङ्गन्यास करके प्राणायाम करें। तत्पश्चात माता भवानी का ध्यान करते हुए पृष्ठ सं० १२ पर दिए हुए दो श्लोकों को भक्ति-श्रद्धायुक्त पढकर पुष्पाञ्जलि अर्पित करें। अब 'बीजत्रयाय विद्महे......प्रचोदयात' से नीचे लिखी छः आहुतियां हवन सामग्री ओर शृद्ध घी की हवनकुण्ड में प्रदीप्त अग्नि में इस प्रकार समर्पित करें :—

ॐ बीजत्रयाय विद्महे स्वाहा।
,, तत्प्रधानाय धीमहि ,,।
,, तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ,,।
,, बीजत्रयाय विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि स्वाहा।
,, तन्नः शक्ति प्रचोदयात् स्वाहा।
,, बीजत्रयाय विद्महे तत्प्रधानाय धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् स्वाहा।

अब मूल मंत्र "ॐ श्रीं श्रीं......हुं फट् स्वाहा" से या तो एक, या दस (दशाम्) या १०८ (पूरी माला) की आहुतियाँ दें। अब आप सहस्रनामस्वाहाकारः (नामावली) से सीधा माता भवानी का हवन शुरू करें।

हवन करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें

(१) पवित्र दाएँ हाथ की अनामिका उँगली में धारण करके ही हवन करें। (छोटी उँगली के साथ वाली उँगली अनामिका कहलाती है।)

(२) तर्जनी को छोड़ कर शेष चार उँगलियों से ही हवन सामग्री की आहुतियां दें (अंगूठे के साथ वाली उँगली को तर्जनी कहते हैं।)

(३) माता भावानी के प्रत्येक नाम के उच्चारण (चतुर्थो विभक्ति) पर हवन सामग्री की आहुति स्वाहा के साथ अर्पण करें। इसी प्रकार घी की आहुति भी अर्पण करें। ध्यान रहे किसी भी नाम का चतुर्थ्यन्त उच्चारण हवन सामग्री और घी की आहुति दिए विना न किया जाए। अतः एक हज़ार नामों पर एक हज़ार आहुतियां हवन सामग्री और घी की बराबर पडनी चाहिएँ। ज्यादा हो जाएँ तो अच्छा है परन्तु कम नहीं पडनी चाहिएँ।

(४) हर ९९वें नाम की आहुति देने के पश्चात् 'तेजोऽसि' मन्त्र पढ़कर १००वीं आहुति अर्पण करें। फिर इस पुस्तक में दिए हुए माता भवानी के ध्यान का श्लोक पढ़कर पुष्प अर्पण करें। तत्पश्चात हवन जारी रखें।

(५) १०००वां नाम 'सर्वमङ्गलमङ्गलायै' है। उसकी आहुति अर्पण करने पर माता भवानी के सहस्र नाम पूरे होते हैं। अब पुण्यं सहस्रनामेदमाम्बाया रुद्र...... रूपमकार्शीद्भगवद्धरिः' पढ़ते हुए पुष्प वर्षा करते जाएँ। इसके पश्चात दिए हुए मन्त्र से 'मायाकुण्डलिनी......माता कुमारीत्यसि। अनेन मन्त्रहोमेन आत्मनो ......प्रयिताां प्रीतास्तु' से तर्पण करें। अपने को और सब एकत्रित भक्तजनों को इसी तर्पण-जल का छींटा दें।

(६) अब इन्द्राक्षीस्तोत्र का एक या दस पाठ करें। अन्त में गौरीस्तुति से आरती उतारें। ऐसा करने पर माता भवानी का हवन सम्पन्न हो जाएगा और श्रद्धालु भक्तजन महान पुण्य और आनन्द के भागी हो जाएंगे।

स्तुति पाठ हो या हवन-सकाम हो या निष्काम-भक्ति और श्रद्धायुक्त किए जाएँ। ऐसा करने से ही अभीष्ट फल की प्राप्ति और आनन्द की अनुभूति होगी।

श्याम लाल वातल — प्रेम नाथ साधु

अथ श्रीभवानीनामसहस्रस्तुतिः ।

ॐ नमो भवान्यै ।

अरिशंख कृपाणखेटबाणान्
सुधनुः शूलकतर्जनीं दधाना ।
भवताम् महिषोत्तमाङ्गसंस्था
नवदूर्वासदृशी श्रियेऽस्तु दुर्गा ॥

ॐ शङ्खत्रिशूलशरचापकरां त्रिनेत्रां
तिग्मेतरांशुकलया विकसत्किरीटाम् ।

सिंहस्थितामसुरसिद्धनुतां च दुर्गां
दूर्वानिभां दुरितदुःखहरां नमामि ॥

अकुलकुलपतन्ती चक्रमध्ये स्फुरन्ती ।
मधुरमधुपिबन्ती कण्टकान्भक्षयन्ती ॥

दुरितमपहरन्ती साधकान्पोषयन्ती ।
जयतिजगतिदेवी सुन्दरी क्रीडयन्ती ॥

चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दुवदनप्रभाम् ।
खड्गशक्तिधरां देवीं वरदाभयपाणिकाम् ॥

प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम् ।
भवानीं कालसंहार बद्धमुद्राविभूषिताम् ॥

जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः ।
स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम् ॥

ॐ नमो भवान्यै ।

कैलासशिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् ।
ध्यानोपरतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ॥

सुरासुरशिरोरत्न रञ्जिताङ्घ्रियुगं प्रभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धाञ्जलिरभाषत ॥

श्री नन्दिकेश्वर उवाच ।

देवदेव जगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम ।
रहस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तवत्सलम् ॥

देवतायास्त्वया कस्याः स्तोत्रमेतद्दिवानिशं ।
पठ्यतेऽविरतं नाथ त्वत्तः किमपरः परः ॥

इति पृष्टस्तदा देवो नन्दिकेन जगद्गुरुः ।
प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्रपङ्कजः ॥

श्रीभगवानुवाच ।

साधु साधु गणश्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत् ।
स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यम् कथयामि तत् ॥

पुरा कल्पक्षये लोकान्सिसृक्षुर्मूढचेतना ।
गुणत्रयमयोशक्तिमूलप्रकृतिसंज्ञिता ॥

तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्त्वैस्तैर्महदादिभिः ।
चेतनेति ततः शक्तिर्मांकाप्यालिङ्ग्य तस्थुषी ॥

हेतुः सङ्कल्पजालस्य मनोधिष्ठायिनी शुभा ।

इच्छेति परमा शक्तिरुन्मिमील ततः परम् ॥

ततो वागिति विख्याता शक्तिः शब्दमयी परा ।

प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ॥

ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा ।

सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी ॥

तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते ।

तयैतत्पाल्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते ॥

अर्चिता प्रणता ध्याता सर्वभावविनिश्चिता ।

आराधिता स्तुता सैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥

तस्या अनुग्रहादेव तामेव स्तुतवानहम् ।
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्यप्राणिपूजितैः ॥

स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा ।
तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वर्यं पदमुत्तमम् ॥

तत्प्रभावान्मया सृष्टं जगदेतच्चराचरम् ।
ससुरासुरगन्धर्वयक्षराक्षसमानवम् ॥

सपन्नगं ससमुद्रं सशैलवनकाननम् ।
सराशिग्रहनक्षत्रं पंचभूतगुणान्वितम् ॥

नन्दिन्नामसहस्त्रेण स्तवेनानेन सर्वदा ।
स्तुवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम् ॥

इत्युक्तोपरतं देवं चराचरगुरुं विभुम् ।
प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ॥

श्री नन्दिकेश्वर उवाच ।

भगवन्देवदेवेश लोकनाथ जगत्पते ।
भक्तोस्मि तव दासोस्मि प्रसादः क्रियतां मयि ॥

देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभवामपि चास्य तु ॥

श्रीभगवानुवाच ।

श्रुणु नन्दिनमहाभाग स्तवराजमिमं शुभम् ।
सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुखमोक्षदम् ॥
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः ।
त्रिकालं श्रद्धया युक्तैर्नातः परतरः स्तवः ॥

अस्य श्रीभवानीनामसहस्रस्तवराजस्य, महादेवऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, आद्या शक्तिः, भगवती भवानी देवता, ह्रीं बीजं, श्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपारजित-

पापनिवारणार्थं श्री दुर्गा/शारिका/महाराज्ञा ...देवी प्रसन्नार्थं शुभफल प्राप्त्यर्थं पाठे/होमे विनियोगः ।

। अथ करन्यासः ।

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,
ॐ महामायायै तर्जनीभ्यां नमः,
ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यां नमः,
ॐ गिरिशप्रियायै अनामिकाभ्यां नमः,
ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः,

ॐ करालिन्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

। अथ षडङ्गन्यासः ।

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः,

ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा,

ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट्,

ॐ गिरिशप्रियायै कवचायहुम्,

ॐ गौर्यै नेत्राभ्यां वौषट्,

ॐ करालिन्यै अस्त्राय फट् ।

प्राणायामः ।

। अथ ध्यानम् ।

ॐ बालार्कमण्डलाभासं चतुर्बाहुं त्रिलोचनम् ।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥ १ ॥

ॐ अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्याम्
अम्भोजपाशसृणिरक्तकपालहस्ताम् ।
रक्ताङ्गरागरशनाभरणां त्रिनेत्राम्
ध्याये शिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ॥ २ ॥

ॐ बीजत्रयाय विद्महे तत्प्रधानायधीमहि
तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ॥

। अथ मूलम् ।

ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं भवानि हुं फट् स्वाहा ॥

—卐—

॥ अथ श्रीभवानीसहस्रनामस्तुति ॥

॥ श्री ईश्वर उवाच॥

ॐ महाविद्या जगन्माता महालक्ष्मीः शिवप्रिया ।
विष्णुमाया शुभा शान्ता सिद्धा सिद्ध सरस्वती ॥१॥

क्षमा कान्तिः प्रभा ज्योत्स्ना पार्वती सर्वमङ्गला ।
हिङ्‌गुला चण्डिका दान्ता पद्मा लक्ष्मीर्हरिप्रिया ॥२॥

त्रिपुरानन्दिनी नन्दा सुनन्दा सुरवन्दिता ।
यज्ञविद्या महामाया वेदमाता सुधाधृतिः ॥३॥

प्रीतिः प्रथा प्रसिद्धा च मृडानी विन्ध्यवासिनी ।
सिद्धविद्या महाशक्तिः पृथ्वी नारदसेविता ॥४॥

पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पद्मलोचना ।
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥५॥

ज्वालामुखी सुगोत्रा च ज्योतिः कुमुदहासिनी ।
दुर्गमा दुर्लभा विद्या स्वर्गतिः पुरवासिनी ॥६॥

अपर्णा शाम्बरीमाया मदिरा मृदुहासिनी ।
कुलवागीश्वरी नित्यानित्यक्लिन्ना कृशोदरी ॥७॥

कामेश्वरी च नीला च भीरुण्डा वह्निवासिनी ।
लम्बोदरी महाकाली विद्याविद्येश्वरी तथा ॥८॥

नरेश्वरी च सत्या च सर्वसौभाग्यवर्धिनी ।
सङ्कर्षणी नारसिंही वैष्णवी च महोदरी ॥९॥

कात्यायनी च चम्पा च सर्वसम्पत्तिकारिणी ।
नारायणी महानिद्रा योगनिद्रा प्रभावती ॥१०॥

प्रज्ञापारमिता प्रज्ञा तारा मधुमती मधुः ।
क्षीरार्णवसुधाहारा कालिका सिंहवाहिनी ॥११॥

ॐकारा वसुधाकारा चेतना कोपनाकृतिः ।
अर्धबिन्दुधरा धारा विश्वमाता कलावती ॥१२॥

पद्मावती सुवस्त्रा च प्रबुद्धा च सरस्वती ।
कुण्डासना जगद्धात्री बुद्धमाता जिनेश्वरी ॥१३॥

जिनमाता जिनेन्द्रा च शारदा हंसवाहना ।
राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा सुधाकारा सुधात्मिका ॥१४॥

राजनीतिस्त्रयीवार्ता दण्डनीतिः क्रियावती ।
सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा सद्गतिः सत्परायणा ॥१५॥

सिन्धुर्मन्दाकिनी गङ्गा यमुना च सरस्वती ।
गोदावरी विपाशा च कावेरी च शतद्रुका ॥१६॥

सरयूश्चन्द्रभागा च कौशिकी गण्डकी शुचिः ।
नर्मदा कर्मनाशा च चर्मण्वत्यथ देविका ॥१७॥

वेत्रवती वितस्ता च वरदा नरवाहना ।
सती पतिव्रता साध्वी सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥१८॥

एकचक्षुः सहस्राक्षी सुश्रोणिर्भगमालिनी ।
सेनाश्रेणिः पताका च सुव्यूहा युद्धकाङ्क्षिणी ॥१९॥

पताकिनी दयारम्भा विपञ्ची पञ्चमप्रिया ।
परापरकलाकान्ता त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी ॥२०॥

ऐन्द्री माहेश्वरी ब्राह्मी कौमारी कुलवासिनी ।
इच्छा भगवती शक्तिः कामधेनुः कृपावती ॥२१॥

वज्रायुद्धा वज्रहस्ता चण्डी चण्डपराक्रमा ।
गौरी सुवर्णवर्णा च स्थितिसंहारकारिणी ॥२२॥

एकानेका महेज्या च शतबाहुर्महाभुजा ।
भुजङ्गभूषणा भूषा षट्चक्रक्रमवासिनी ॥२३॥

षट्चक्रभेदिनी श्यामा कायस्था कायवर्जिता ।
सुस्मिता सुमुखी क्षामा मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥२४॥

अजा च बहुवर्णा च पुरुषार्थप्रवर्तिनी ।
रक्तानीला सिता श्यामा कृष्णा पीता च कर्बुरा ॥२५॥

क्षुधा तृष्णा जरा वृद्धा तरुणी करुणालया ।
कला काष्ठा मुहूर्त्ता च निमेषा कालरूपिणी ॥२६॥

सुकर्णरसना नासा चक्षुःस्पर्शवती रसा ।
गन्धप्रिया सुगन्धा च सुस्पर्शा च मनोगतिः ॥२७॥

मृगनाभिमृगाक्षी च कर्पूरामोदधारिणी ।
पद्मयोनिः सुकेशी च सुलिङ्गा भगरूपिणी ॥२८॥

योनिमुद्रा महामुद्रा खेचरी खगगामिनी ।
मधुश्रीर्माधवीवल्ली मधुमत्ता मदोद्धता ॥२९॥

मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणेक्षुवचापिनी ।

रक्ताम्बरधरा क्षीबा रक्तपुष्पावतंसिनी ॥३०॥

शुभ्राम्बरधरा धीरा महाश्वेता वसुप्रिया ।
सुवेणिः पद्महस्ता च मुक्ताहारविभूषणा ॥३१॥
कर्पूरामोदनिःश्वासा पद्मिनी पद्ममन्दिरा ।
खड्गिनी चक्रहस्ता च भुसुण्डी परिघायुधा ॥३२॥
चापिनी पाशहस्ता च त्रिशूलवरधारिणी ।
सुबाणा शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना ॥३३॥
वरायुधधरा वीरा वीरपानमदोत्कटा ।
वसुधा वसुधारा च जया शाकम्भरी शिवा ॥३४॥
विजया च जयन्ती च सुस्तनी शत्रुनाशिनी ।
अन्तर्वत्नी वेदशक्तिर्वरदा वरधारिणी ॥३५॥

शीतला च सुशीला च बालग्रहविनाशिनी ।
कुमारी च सुपर्वा च कामाख्या कामवन्दिता ॥३६॥
जालन्धराऽनन्ता कामरूपनिवासिनी ।
कामबीजवती सत्या सत्यधर्मपरायणा ॥३७॥
स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिनी ।
षट्कोणा च त्रिकोणा च त्रिनेत्रा त्रिपुरसुन्दरी ॥३८॥
वृषप्रिया वृषारुढा महिषासुरघातिनी ।
सुम्भदर्पहरा दीप्ता दीप्तपावकसन्निभा ॥३९॥
कपालभूषणा काली कपालमालधारिणी ।
कपालकुण्डला दीर्घा शिवादूती घनध्वनिः ॥४०॥

सिद्धिदा बुद्धिदा नित्या सत्यमार्ग प्रबोधिनी ।
कम्बुग्रीवा वसुमती छत्रच्छायाकृतालया ॥४१॥
जगद्गर्भा कुण्डलिनी भुजगाकारशायिनी ।
प्रोल्लसत्सप्तपद्मा च नाभिनालमृणालिनी ॥४२॥
मूलाधारा निराकारा वह्निकुण्डकृतालया ।
वायुकुण्डसुखासीना निराधारा निराश्रया ॥४३॥
श्वासोच्छ्वासगतिर्जीवाग्राहिणी वह्निसंश्रया ।
वह्नितन्तुसमुत्थाना षड्रसास्वादलोलुपा ॥४४॥
तपस्विनी तपःसिद्धिः तापसी च तपःप्रिया ।
तपोनिष्ठा तपोयुक्ता तपसः सिद्धिदायिनी ॥४५॥

सप्तधातुमयी मूर्तिः सप्तधात्वन्तराश्रया ।
देहपुष्टिर्मनस्तुष्टिश्चान्नपुष्टिर्बलोद्धता ॥४६॥
औषधिर्वैद्यमाता च द्रव्यशक्तिः प्रभाविनी ।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च सुपथ्या रोगनाशिनी ॥४७॥
मृगया मृगमांसादा मृगत्वङ्मृगलोचना ।
वागुरा बन्धरूपा च वधरूपा वदोद्धता ॥४८॥
वन्दी वन्दिस्तुताकारा काराबन्धविमोचिनी ।
शृङ्खला खलहा विद्युद्दृढबन्धविमोचिनी ॥४९॥
अम्बिकाऽम्बालिका चाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता ।
कौलिकी कुलविद्या च सुकुला कुलपूजिता ॥५०॥

कालचक्रभ्रमा भ्रान्ता विभ्रमा भ्रमनाशिनी ।
वात्याली मेघमाला च सुवृष्टिः सस्यवर्द्धिनी ॥५१॥
अकारा च इकारा च उकारैकाररूपिणी ।
ह्रींकारीबीजरूपा च क्लींकाराम्बरवासिनी ॥५२॥
सर्वाक्षरमयीशक्तिरक्षरा वर्णमालिनी ।
सिन्दूरारुणवक्त्रा च सिन्दूरतिलकप्रिया ॥५३॥
वश्या च वश्यबीजा च लोकवश्यविभाविनी ।
नृपवश्या नृपैःसेव्या नृपवश्यकरीप्रिया ॥५४॥
महिषी नृपमान्या च नृमान्या नृपनन्दिनी ।
नृपधर्ममयी धन्या धनधान्यविवर्द्धिनी ॥५५॥

चतुर्वर्णमयो मूर्तिश्चतुर्वर्णैश्चपूजिता ।
सर्वधर्ममयी सिद्धिश्चतुराश्रमवासिनी ॥५६॥
ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या शूद्रा चावरवर्णजा ।
वेदमार्गरता यज्ञा वेदविश्वविभाविनी ॥५७॥
अस्त्रशस्त्रमयोविद्या वरशस्त्रास्त्रधारिणी ।
सुमेधाः सत्यमेधा च भद्रकाल्यऽपराजिता ॥५८॥
गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या सावित्री त्रिपदाश्रया ।
त्रिसन्ध्या त्रिपदी धात्री सुपर्वा सामगायिनी ॥५९॥
पाञ्चाली बालिका बाला बालक्रीडा सनातनी ।
गर्भाधारधरा शून्या गर्भाशयनिवासिनी ॥६०॥

सुरारिर्घातिनी कृत्या पूतना च तिलोत्तमा ।
लज्जा रसवती नन्दा भवानी पापनाशिनी ॥६१॥
पट्टाम्बरधरा गीतिः सुगीतिर्ज्ञानलोचना ।
सप्तस्वरमयी तन्त्री षड्जमध्यमधैवता ॥६२॥
मूर्च्छना ग्रामसंस्थाना स्वस्था स्वस्थानवासिनी ।
अट्टाट्टहासिनी प्रेता प्रेतासननिवासिनी ॥६३॥
नृत्तगीतप्रियाकामा तुष्टिदा पुष्टिदाक्षया ।
निष्ठा सत्यप्रिया प्रज्ञा लोकेशा च सुरोत्तमा ॥६४॥
सविषा ज्वालिनीज्वाला विषमोहार्तिनाशिनी ।
विषारिर्नागदमनी कुरुकुल्लाऽमृतोद्भवा ॥६५॥

भूतभीतिहरा रक्षा भूतावेशविनाशिनी ।
रक्षोघ्नीराक्षसी रात्रिर्दीर्घनिद्रा दिवागतिः ॥६६॥
चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च सूर्यकान्तिर्निशाचरी ।
डाकिनी शाकिनी शिष्या हाकिनी चक्रवाकिनी ॥६७॥
सितासितप्रिया स्वङ्गा सकला वनदेवता ।
गुरुरूपधरा गुर्वी मृत्युर्मारी विशारदा ॥६८॥
महामारी विनिद्रा च तन्द्रा मृत्युविनाशिनी ।
चन्द्रमण्डलसङ्काशा चन्द्रमण्डलवासिनी ॥६९॥
अणिमादिगुणोपेता सुस्पृहा कामरूपिणी ।
अष्टसिद्धप्रदा प्रौढा दुष्टदानवघातिनी ॥७०॥

अनादिनिधना पुष्टिश्चतुर्बाहुश्चतुर्मुखी ।
चतुःसमुद्रशयना चतुर्वर्गफलप्रदा ॥७१॥
काशपुष्पप्रतीकाशा शरत्कुमुदलोचना ।
भूता भव्या भविष्या च शैलजा शैलवासिनी ॥७२॥
वाममार्गरता वामा शिववामाङ्गवासिनी ।
वामाचारप्रिया तुष्टा लोपामुद्राप्रबोधिनी ॥७३॥
भूतात्मा परमात्मा च भूतभावविभाविनि ।
मङ्गला च सुशीला च परमार्थप्रबोधिका ॥७४॥
दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदक्षिणा हरिप्रिया ।
योगिनी योगयुक्ता च योगाङ्गा ध्यानशालिनी ॥७५॥

योगपट्टधरामुक्ता मुक्तानां परमागतिः ।
नारसिंही सुजन्मा च त्रिवर्गफलदायिनी ॥७६॥
धर्मदा धनदा चैव कामदा मोक्षदा द्युतिः ।
साक्षिणी क्षणदा दक्षा दक्षजा कोटिरूपिणी ॥७७॥
क्रतुः कात्यायनी स्वच्छा स्वच्छन्दा च कविप्रिया ।
सत्यागमा बहिःस्था च काव्यशक्तिः कवित्वदा ॥७८॥
मेनापुत्री सतीमाता मैनाकभगिनी तडित् ।
सौदामिनी स्वधामा च सुधामा धामशालिनी ॥७९॥
सौभाग्यदायिनी द्यौश्च सुभगा द्युतिवर्धिनी ।
श्रीःकृत्तिवसना चैव कङ्काली कलिनाशिनी ॥८०॥

रक्तबीजवधोद्भूता सुतन्तुर्बीजसन्ततिः ।
जगज्जीवा जगद्बीजा जगत्त्रयहितैषिणी ॥८१॥
चामीकररुचिश्चान्द्री साक्षया षोडशीकला ।
यत्तत्पदानुबन्धा च यक्षिणी धनदार्चिता ॥८२॥
चित्रिणी चित्रमाया च विचित्रा भुवनेश्वरी ।
चामुण्डा मुण्डहस्ता च चण्डमुण्डवधोद्धुरा ॥८३॥
अष्टम्येकादशी पूर्णा नवमी च चतुर्दशी ।
अमा कलशहस्ता च पूर्णकुम्भधराधरा ॥८४॥
अभीरुर्भैरवी भीमा भीरा त्रिपुरभैरवी ।
महारुण्डा च रौद्री च महाभैरवपूजिता ॥८५॥

निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा करालदशनानना ।
कराला विकराला च घोरघुर्घुरनादिनी ॥८६॥
रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च बन्धूककुसुमारुणा ।
कादम्बरी पटासा च काश्मीरी कुङ्कुमप्रिया ॥८७॥
क्षान्तिर्बहुसुवर्णा च रतिर्बहुसुवर्णदा ।
मातङ्गिनी वरारोहा मत्तमातङ्गगामिनी ॥८८॥
हँसः हंसगतिर्हंसी हंसोज्ज्वलशिरोरुहा ।
पूर्णचन्द्रमुखी श्यामा स्मितास्या श्यामकुण्डला ॥८९॥
मषी च लेखिनी लेख्या सुलेखा लेखकप्रिया ।
शङ्खिनी शङ्खहस्ता च जलस्था जलदेवता ॥९०॥

कुरुक्षेत्रावनिः काशी मथुरा काञ्च्यवन्तिका ।
अयोध्या द्वारकामाया तीर्था तीर्थकरप्रिया ॥९१॥
त्रिपुष्कराऽप्रमेया च कोशस्था कोशवासिनी ।
कौशिकी तु कुशावर्ता कौशाम्बी कोशवर्द्धिनी ॥९२॥
कोशदा पद्मकोशाक्षी कुसुमा कुसुमप्रिया ।
तोतुला च तुलाकोटिः कूटस्था कोटराश्रया ॥९३॥
स्वयम्भूश्च सुरुपा च स्वरूपा रूपवर्द्धिनी ।
तेजस्विनी सुभिक्षा च बलदा बलदायिनी ॥९४॥
महाकोशी महावर्ता बुद्धि सदसदात्मिका ।
महाग्रहहरा सौम्या विशोका शोकनाशिनी ॥९५॥

सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च राजसी च रजोवृत्ता ।
तामसी च तमोयुक्ता गुणत्रयविभाविनी ॥९६॥
अव्यक्ता व्यक्तरूपा च वेदविद्या च शाम्भवी ।
शंकराकल्पिनीकल्पा मनःसङ्कल्पसन्ततिः ॥९७॥
सर्वलोकमयीशक्तिः सर्वश्रवणगोचरा ।
सर्वज्ञानवतीवाञ्छा सर्वतत्त्वानुबोधिनी ॥९८॥
जाग्रती च सुषुप्तिश्च स्वप्नावस्था तुरीयका ।
त्वरा मन्दगतिर्मन्दा मदिरामोदधारिणी ॥९९॥
पानभूमिः पानपात्रा पानदानकरोद्यता ।
आघूर्णारुणनेत्रा च किञ्चिदव्यक्तभाषिणी ॥१००॥

आशापूरा च दीक्षा च दक्षा दीक्षितपूजिता ।
नागवल्ली नागकन्या भोगिनी भोगवल्लभा ॥१०१॥
सर्वशास्त्रवतीविद्या सुस्मृतिर्धर्मवादिनी ।
श्रुतिः श्रुतिधरा ज्येष्ठा श्रेष्ठा पातालवासिनी ॥१०२॥
मीमांसा तर्कविद्या च सुभक्तिर्भक्तवत्सला ।
सुनाभिर्यातना जातिर्गम्भीराभाववर्जिता ॥१०३॥
नागपाशधरामूर्तिरगाधा नागकुण्डला ।
सुचक्रा चक्रमध्यस्था चक्रकोणनिवासिनी ॥१०४॥
सर्वमन्त्रमयीविद्या सर्वमन्त्राक्षरावलिः ।
मधुस्रवा स्रवन्ती च भ्रामरी भ्रमरालका ॥१०५॥

मातृमण्डलमध्यस्था मातृमण्डलवासिनी ।
कुमारजननी क्रूरा सुमुखी ज्वरनाशिनी ॥१०६॥
अतीता विद्यमाना च भाविनी प्रीतिमञ्जरी ।
सर्वसौख्यवतीयुक्तिराहारपरिणामिनी ॥१०७॥
निदानं पञ्चभूतानां भवसागरतारिणी ।
अक्रूरा च ग्रहवती विग्रहा ग्रहवर्जिता ॥१०८॥
रोहिणी भूमिगर्भा च कालभूः कालवर्तिनी ।
कलङ्करहितानारी चतुष्षष्ट्यभिधावती ॥१०९॥
जीर्णा च जीर्णवस्त्रा च नूतना नववल्लभा ।
अरजाश्च रतिः प्रीतिः रतिरागविवर्द्धिनी ॥११०॥

पञ्चवातगतिर्भिन्ना पञ्चश्लेष्माशयाधरा ।
पञ्चपित्तबलोशक्तिः पञ्चस्थानविबोधिनी ॥१११॥
उदक्याच वृषस्यन्ती बहिःप्रस्रविणोत्र्यहम् ।
रजःशुक्रधराशक्तिर्जरायुर्गर्भधारिणी ॥११२॥
त्रिकालज्ञा त्रिलिङ्गा च त्रिमूर्तिः त्रिपुरवासिनी ।
अरागा शिवतत्त्वा च कामतत्त्वानुरागिणी ॥११३॥
प्राच्यवाची प्रतीचोदिगुदीचोर्दिग्विदिग्दिशाम् ।
अहंकृतिरहंकारा बलिमाया बलिप्रिया ॥११४॥
स्रुक् स्रुवा सामिधेनी च सश्रद्धा श्राद्धदेवता ।
माता मातामही तृप्तिः पितृमाता पितामही ॥११५॥

स्नुषा दौहित्रिणी पुत्री पौत्री नप्त्री शिशुप्रिया ।
स्तनदा स्तनधारा च विश्वयोनिः स्तनन्धयी ॥११६॥
शिशूत्सङ्गधरा दोला दोलाक्रीडाभिनन्दिनी ।
उर्वशी कदली केका विशिखा शिखिनर्तिनी ॥११७॥
खट्वाङ्गधारिणी खट्वा बाणपुङ्खानुवर्तिनी ।
लक्ष्यप्राप्तिः कलालक्ष्या लक्ष्या च शुभलक्षणा ॥११८॥
वर्तिनी सुपथाचारा परिखा च खनिर्वृतिः ।
प्राकारवलया वेला मर्यादा च महोदधौ ॥११९॥
पोषणीशोषणीशक्तिर्दीर्घकेशी सुलोमशा ।
ललिता मांसला तन्वी वेदवेदाङ्गधारिणी ॥१२०॥

नरासृक्पानमत्ता च नरमुण्डास्थिभूषणा ।
अक्षक्रीडारतिः शारी शारिका शुकभाषिणी ॥१२१॥
शाम्बरी गारुडीविद्या वारुणी वरुणार्चिता ।
वाराही मुण्डहस्ता च दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरा ॥१२२॥
मीनमूर्तिधरा मूर्ता वदान्या प्रतिमाश्रया ।
अमूर्ता निधिरूपा च सालिग्रामशिलाशुचिः ॥१२३॥
स्मृतिः संस्काररूपा च सुसंस्कारा च संस्कृतिः ।
प्राकृता देशभाषा च गाथा गीतिः प्रहेलिका ॥१२४॥
इडा च पिङ्गला पिङ्गा सुषुम्ना सूर्यवाहिनी ।
शशिस्रवा च तालुस्था काकिन्यमृतजीविनी ॥१२५॥

अणुरूपा बृहद्रूपा लघुरूपा गुरुस्थिरा ।
स्थावरा जङ्गमा देवी कृतकर्मफलप्रदा ॥१२६॥
विषयाक्रान्तदेहा च निर्विशेषा जितेन्द्रिया ।
विश्वरूपा चिदानन्दा परब्रह्मप्रबोधिनी ॥१२७॥
निर्विकारा च निर्वैरा विरतिः सत्यवर्धिनी ।
पुरुषाज्ञा च भिन्ना च क्षान्तिःकैवल्यदायिनी ॥१२८॥
विविक्तसेविनी प्रज्ञाजनयित्री बहुश्रुतिः ।
निरीहा च समस्तैका सर्वलोकैकसेविता ॥१२९॥
सेवा सेवाप्रिया सेव्या सेवाफलविवर्द्धिनी ।
कलौ कल्किप्रिया काली दुष्टम्लेच्छविनाशिनी ॥१३०॥

प्रत्यञ्चा च धनुर्यष्टिः खड्गधारा दुरानतिः ।
अश्वप्लुतिश्च वल्गा च सृणिः सन्मत्तवारणा ॥१३१॥
वीरभूर्वीरमाता च वीरसूर्वीरनन्दिनी ।
जयश्रीर्जयदीक्षा च जयदा जयवर्द्धिनी ॥१३२॥
सौभाग्यसुभगाकारा सर्वसौभाग्यवर्द्धिनी ।
क्षेमङ्करी सिद्धिरूपा सत्कीर्तिः पथिदेवता ॥१३३॥
सर्वतीर्थमयीमूर्तिः सर्वदेवमयीप्रभा ।
सर्वसिद्धिप्रदाशक्तिः सर्वमङ्गलमङ्गला ॥१३४॥

पुण्यं सहस्रनामेदमम्बाया रुद्रभाषितम् ।
चतुर्वर्गप्रदं सत्यं नन्दिकेन प्रकाशितम् ॥
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरः स्तवः ।
नातः परतरा विद्या तीर्थं नातः परं परम् ॥
ते धन्याः कृतपुण्यास्ते त एव भुवि पूजिताः ।
एकभावं मुदा नित्यं येर्चयन्ति महेश्वरीम् ॥
देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता ।
भूयात्सा वरदा लोके साधूनां विश्वमंगला ॥
एतामेव पुराराध्य विद्यां त्रिपुरभैरवीम् ।
त्रैलोक्यमोहनं रूपमकार्शोद्भगवद्धरिः ॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि ॥

अनेन मन्त्रपाठेन/होमेन आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित-पापनिवारणार्थं श्रीइष्टदेवीप्रीत्यर्थं भगवती अमा कामा चार्वंगी टङ्कधारिणी तारा पार्वती यक्षिणी श्रीशारिका भगवती श्रीशारदा भगवती श्रीमहाराज्ञी भगवती श्रीज्वाला

भगवती व्रीडा भगवती वैखरी भगवती वितस्ता भगवती गङ्गा भगवती यमुना भगवती कालिका भगवती सिद्धलक्ष्मी महालक्ष्मी महात्रिपुरसुन्दरी सहस्रनाम्नी देवी भवानी सपरिवारा सवाहना सायुधा सांगा प्रीयतां प्रीतास्तु ।

इति श्रीरुद्रयामले तन्त्रे नन्दिकेश्वर संवादे
भवानीनामसहस्रस्तवराजः सम्पूर्णः ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

॥ श्रीभवानीसहस्रनामस्वाहाकारः ॥

१. ॐ महाविद्यायै स्वाहा
„ जगन्मात्रे „
„ महालक्ष्म्यै „
„ शिवप्रियायै „
५. „ विष्णुमायायै „

६. ॐ शुभायै स्वाहा
„ शान्तायै „
„ सिद्धायै „
„ सिद्धसरस्वत्यै „
१०. „ क्षमायै „

११. ॐ कान्त्यै स्वाहा
" प्रभायै "
" ज्योत्स्नायै "
" पार्वत्यै "
" सर्वमङ्गलायै "
" हिङ्गुलायै "
" चण्डिकायै "
" दान्तायै "
" पद्मायै "
२०. " लक्ष्म्यै "

२१. ॐ हरिप्रियायै स्वाहा
" त्रिपुरायै "
" नन्दिन्यै "
" नन्दायै "
" सुनन्दायै "
" सुरवन्दितायै "
" यज्ञविद्यायै "
" महामायायै "
" वेदमात्रे "
३०. " सुधायै "

३१. ॐ धृत्यै स्वाहा
" प्रीत्यै "
" प्रथायै "
" प्रसिद्धायै "
" मृडान्यै "
" विन्ध्यवासिन्यै "
" सिद्धविद्यायै "
" महाशक्त्यै "
" पृथ्व्यै "
४०. " नारदसेवितायै "

४१. ॐ पुरुहूतप्रियायै स्वाहा
" कान्तायै "
" कामिन्यै "
" पद्मलोचनायै "
" प्रह्लादिन्यै "
" महामात्रे "
" दुर्गायै "
दुर्गतिनाशिन्यै "
" ज्वालामुख्यै "
५०. " सुगोत्रायै "

५१. ॐ ज्योतिषै स्वाहा
,, कुमुदहासिन्यै ,,
,, दुर्गमायै ,,
,, दुर्लभायै ,,
,, विद्यायै ,,
,, स्वर्गतये ,,
,, पुरवासिन्यै ,,
,, अपर्णायै ,,
,, शाम्बरीमायायै ,,
६०. ,, मदिरायै ,,

६१. ॐ मृदुहासिन्यै स्वाहा
,, कुलवागीश्वर्यै ,,
,, नित्यायै ,,
,, नित्यक्लिन्नायै ,,
,, कृशोदर्यै ,,
,, कामेश्वर्यै ,,
,, नीलायै ,,
,, भीरुण्डायै ,,
,, वह्निवासिन्यै ,,
७०. ,, लम्बोदर्यै ,,

७१. ॐ महाकाल्यै स्वाहा
,, विद्याविद्येश्वर्यै ,,
,, नरेश्वर्यै ,,
,, सत्यायै ,,
,, सर्वसौभाग्यवर्धिन्यै ,,
,, सङ्कर्षण्यै ,,
,, नारसिंह्यै ,,
,, वैष्णव्यै ,,
,, महोदर्यै ,,
८०. ,, कात्यायन्यै ,,

८१. ॐ चम्पायै स्वाहा
,, सर्वसम्पत्तिकारिण्यै ,,
,, नारायण्यै ,,
,, महानिद्रायै ,,
,, योगनिद्रायै ,,
,, प्रभावत्यै ,,
,, प्रज्ञापारमितायै ,,
,, प्रज्ञायै ,,
,, तारायै ,,
९०. ,, मधुमत्यै ,,

९१. ॐ मध्वै	स्वाहा	ॐ वसुधाकारायै	स्वाहा
,, क्षीरार्णवसुधाहारायै		,, चेतनायै	,,
,, कालिकायै	,,	,, कोपनाकृत्यै	,,
,, सिंहवाहिन्यै	,,	,, अर्धबिन्दुधरायै	,,
,, ॐकारायै	,,		

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽति-दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ धारायै स्वाहा ॥१००॥

या देवी शिवकेशवादिजननी यावैजगद्रूपिणी या ब्रह्मादि-पिपीलिकान्तजनतानन्दैकसंदायिनी । या पञ्चप्रणमन्त्रिलिम्पन-यनी या चित्कलामालिनी सा पायात्परदेवता भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥

१०१. ॐ	विश्वमात्रे	स्वाहा	११०. ॐ	सरस्वत्यै	स्वाहा
,,	कलावत्यै	,,	,,	कुण्डासनायै	,,
,,	पद्मावत्यै	,,	,,	जगद्धात्र्यै	,,
,,	सुवस्त्रायै	,,	,,	बुद्धमात्रे	,,
,,	प्रबुद्धायै	,,	,,	जिनेश्वर्यै	,,

१११. ॐ जिनमात्रे	स्वाहा		१२१. ॐ वार्तायै	स्वाहा	
,, जिनेन्द्रायै	,,		,, दण्डनीतये	,,	
,, शारदायै	,,		,, क्रियावत्यै	,,	
,, हंसवाहनायै	,,		,, सद्भूतये	,,	
,, राज्यलक्ष्म्यै	,,		,, तारिण्यै	,,	
,, वषट्कारायै	,,		,, श्रद्धायै	,,	
,, सुधाकारायै	,,		,, सद्गत्यै	,,	
,, सुधात्मिकायै	,,		,, सत्परायणायै	,,	
,, राजनीत्यै	,,		,, सिन्धवे	,,	
१२०. ,, त्रय्यै	,,		१३०. ,, मन्दाकिन्यै	,,	

१३१. ॐ	गङ्गायै	स्वाहा	१४१. ॐ	गण्डक्यै	स्वाहा
,,	यमुनायै	,,	,,	शुचये	,,
,,	सरस्वत्यै	,,	,,	नर्मदायै	,,
,,	गोदावर्यै	,,	,,	कर्मनाशायै	,,
,,	विपाशायै	,,	,,	चर्मण्वत्यै	,,
,,	कावेर्यै	,,	,,	देविकायै	,,
,,	शतद्रुकायै	,,	,,	वेत्रवत्यै	,,
,,	सरयवे	,,	,,	वितस्तायै	,,
,,	चन्द्रभागायै	,,	,,	वरदायै	,,
१४०. ,,	कौशिक्यै	,,	१५०. ,,	नरवाहनायै	,,

१५१. ॐ सत्यै स्वाहा
,, पतिव्रतायै ,,
,, साध्व्यै ,,
,, सुचक्षुषे ,,
,, कुण्डवासिन्यै ,,
,, एकचक्षुषे ,,
,, सहस्राक्ष्यै ,,
,, सुश्रोणये ,,
,, भगमालिन्यै ,,
१६०. ,, सेनायै

१६१. ॐ श्रेणये स्वाहा
,, पताकायै ,,
,, सुव्यूहायै ,,
,, युद्धकांक्षिन्यै ,,
,, पताकिन्यै ,,
,, दयारम्भायै ,,
विपञ्चीपञ्चमप्रियायै
परापरकलाकान्तायै ,,
,, त्रिशक्तये ,,
१७१. ,, मोक्षदायिन्यै ,,

१७१. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा
" माहेश्वर्यै "
" ब्राह्म्यै "
" कौमार्यै "
" कुलवासिन्यै "
" इच्छायै "
" भगवत्यै "
" शक्तये "
" कामधेनवे "
१८०. " कृपावत्यै "

१८१. ॐ वज्रायुधायै स्वाहा
" वज्रहस्तायै "
" चण्ड्यै "
" चण्डपराक्रमायै "
" गौर्यै "
" सुवर्णवर्णायै "
स्थितिसंहारकारिण्यै "
" एकायै "
" अनेकायै "
१९०. " महेज्यायै "

१९१. ॐ शतबाहवे	स्वाहा		ॐ षट्चक्रभेदिन्यै	स्वाहा
,, महाभुजायै	,,		,, श्यामायै	,,
,, भुजङ्गभूषणायै	,,		,, कायस्थायै	,,
,, भूषायै	,,		,, कायवर्जितायै	,,
षट्चक्रक्रमवासिन्यै	,,			

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः।

ॐ सुस्मितायै स्वाहा ॥२००॥

बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रिपङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत् । काश्मीर-प्रवरेशमध्यनगरेप्रद्युम्नपीठे स्थिता देवीसप्तकसंयुता भगवती श्रीशारिका पातु नः ॥

२०१. ॐ सुमुख्यै स्वाहा २०६. ॐ बहुवर्णायै स्वाहा
,, क्षामायै ,, ,, पुरुषार्थप्रवर्तिन्यै ,,
,, मूलप्रकृतये ,, ,, रक्तायै ,,
,, ईश्वर्यै ,, ,, नीलायै ,,
,, अजायै ,, ,, सितायै ,,

२११. ॐ श्यामायै स्वाहा
„ कृष्णायै „
„ पीतायै „
„ कर्बुरायै „
„ क्षुधायै „
„ तृष्णायै „
„ जरावृद्धायै „
„ तरुण्यै „
„ करुणालयायै „
२२०. „ कलायै „

२२१. ॐ काष्ठायै स्वाहा
„ मुहूर्त्तायै „
„ निमेषायै „
„ कालरूपिण्यै „
„ सुकर्णरसनायै „
„ नासायै „
„ चक्षुषे „
„ स्पर्शवत्यै „
„ रसायै „
२३०. „ गन्धप्रियायै „

२३१. ॐ सुगन्धायै स्वाहा
,, सुस्पर्शायै ,,
,, मनोगतये ,,
,, मृगनाभये ,,
,, मृगाक्ष्यै ,,
कर्पूरामोदधारिण्यै ,,
,, पद्मयोनये ,,
,, सुकेश्यै ,,
,, सुलिङ्गायै ,,
२४०. ,, भगरूपिण्यै ,,

२४१. ॐ योनिमुद्रायै स्वाहा
,, महामुद्रायै ,,
,, खेचर्यै ,,
,, खगगामिन्यै ,,
,, मधुश्रियै ,,
,, माधवीवल्ल्यै ,,
,, मधुमत्तायै ,,
,, मदोद्धतायै ,,
,, मातङ्ग्यै ,,
२५०. ,, शुकहस्तायै ,,

२५१. ॐ पुष्पबाणायै स्वाहा
,, इक्षुचापिन्यै ,,
,, रक्ताम्बरधरायै ,,
,, क्षीबायै ,,
रक्तपुष्पावतंसिन्यै ,,
,, शुभ्राम्बरधरायै ,,
,, धीरायै ,,
,, महाश्वेतायै ,,
,, वसुप्रियायै ,,
२६०. ,, सुवेण्यै ,,

२६१. ॐ पद्महस्तायै स्वाहा
मुक्ताहारविभूषणायै ,,
कर्पूरामोदनिःश्वासायै ,,
,, पद्मिन्यै ,,
,, पद्ममन्दिरायै ,,
,, खड्गिन्यै ,,
,, चक्रहस्तायै ,,
,, भुसुण्ड्यै ,,
,, परिघायुधायै ,,
२७०. ,, चापिन्यै ,,

२७१. ॐ पाशहस्तायै स्वाहा
त्रिशूलवरधारिण्यै ,,
,, सुबाणायै ,,
,, शक्तिहस्तायै ,,
,, मयूरवरवाहनायै ,,
,, वरायुधधरायै ,,
,, वीरायै ,,
वीरपानमदोत्कटायै ,,
,, वसुधायै ,,
२८०. ,, वसुधारायै ,,

२८१. ॐ जयायै स्वाहा
,, शाकम्भर्यै ,,
,, शिवायै ,,
,, विजयायै ,,
,, जयन्त्यै ,,
,, सुस्तन्यै ,,
,, शत्रुनाशिन्यै ,,
,, अन्तर्वत्न्यै ,,
,, वेदशक्तये ,,
२९०. ,, वरदायै ,,

२९१. ॐ वरधारिण्यै स्वाहा
,, शीतलायै ,,
,, सुशीलायै ,,
बालग्रहविनाशिन्यै ,,
,, कुमार्यै ,,

२९६. ॐ सुपर्वायै स्वाहा
,, कामाख्यायै ,,
,, कामवन्दितायै ,,
,, जालन्धरधरायै ,,

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसो सुनवाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः । स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ।

ॐ अनन्तायै स्वाहा ॥३००॥

आरक्ताभां त्रिनेत्रां मणिमुकुटवतीं रत्नताटङ्करम्यां
हस्ताम्बोजैः सपाशाङ्कुशमदनधनुः सायकैर्विस्फुरन्तीम् ।
आपीनोत्तुङ्गवक्षोरुहतटविलुठत्तारहारोज्ज्वलाङ्गीं ध्यायाम्यम्भो-
रुहस्थामरुणसुवसनामीश्वरीमीश्वराणाम् ॥

३०१. ॐ कामरूपनिवासिन्यै स्वाहा
,, कामबीजवत्यै ,,
,, सत्यायै ,,
,, सत्यधर्मपरायणायै ,,
,, स्थूलमार्गस्थितायै ,,

३०६. ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा
,, सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिन्यै
,, षट्कोणायै ,,
,, त्रिकोणायै ,,
,, त्रिनेत्रायै ,,

३११. ॐ त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा
" वृषप्रियायै "
" वृषारूढायै "
महिषासुरघातिन्यै "
" सुम्भदर्पहरायै "
" दीप्तायै "
दीप्तपावकसन्निभायै "
" कपालभूषणायै "
" काल्यै "
३२०. कपालमालभारिण्यै

३२१. ॐ कपालकुण्डलायै स्वाहा
" दीर्घायै "
" शिवादूत्यै "
" घनध्वनये "
" सिद्धिदायै "
" बुद्धिदायै "
" नित्यायै "
सत्यमार्गप्रबोधिन्यै "
" कम्बुग्रीवायै "
३३०. " वसुमत्यै "

३३१. ॐ छत्रच्छायाकृतालयायै स्वाहा
" जगद्गर्भायै "
" कुण्डलिन्यै "
" भुजगाकारशायिन्यै "
" प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै "
" नाभिनालमृणालिन्यै "
" मूलाधारायै "
" निराकारायै "
" वह्निकुण्डकृतालयायै "
३४०. " वायुकुण्डसुखासीनायै "

३४१. ॐ निराधारायै स्वाहा
" निराश्रयायै "
" श्वासोच्छ्वासगतये "
" जीवायै "
" ग्राहिण्यै "
" वह्निसंश्रयायै "
" वह्नितन्तुसमुत्थानायै "
" षड्रसास्वादलोलुपायै "
" तपस्विन्यै "
३५०. " तपःसिद्धये "

३५१. ॐ तापस्यै स्वाहा
" तपःप्रियायै "
" तपोनिष्ठायै "
" तपोयुक्तायै "
तपसःसिद्धिदायिन्यै "
सप्तधातुमय्यै मूर्त्यै "
सप्तधात्वन्तराश्रयायै "
" देहपुष्टये "
" मनस्तुष्टये "
३६०. " अन्नपुष्टये "

३६१. ॐ बलोद्धतायै "
" ओषधये "
" वैद्यमात्रे "
" द्रव्यशक्तये "
" प्रभाविन्यै "
" वैद्यायै "
" वैद्यचिकित्सायै "
" सुपथ्यायै "
" रोगनाशिन्यै "
३७०. " मृगयायै "

३७१. ॐ मृगमांसादायै स्वाहा
" मृगत्वचे "
" मृगलोचनायै "
" वागुरायै "
" बन्धरूपायै "
" वधरूपायै "
" वधोद्धतायै "
" वन्द्यै "
वन्दिस्तुताकारायै "
३८०. काराबन्धविमोचिन्यै "

३८१. ॐ शृङ्खलायै स्वाहा
" खलहायै "
" विद्युते "
दृढबन्धविमोचिन्यै "
" अम्बिकायै "
" अम्बालिकायै "
" अम्बायै "
" स्वक्षायै "
" साधुजनार्चितायै "
३९०. " कौलिक्यै "

३९१. ॐ कुलविद्यायै स्वाहा	ॐ विभ्रमायै	”
” सुकुलायै ”	” भ्रमनाशिन्यै	”
” कुलपूजितायै ”	” वात्यालयै	”
” कालचक्रभ्रमायै ”	” मेघमालायै	”
” भ्रान्त्यै ”		

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः ॐ सुवृष्ट्यै स्वाहा ॥४००॥

भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुगकरा श्वेतपद्मासनस्था,
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्वदैत्येन्द्रहन्त्री। वागीशी
सिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनैः सेविता या भवानी, नौम्यहं नौम्यहं
तां हरिहरप्रणतां शारिकां नौमि नौमि ॥

४०१. ॐ सस्यवर्द्धिन्यै स्वाहा
,, अकारायै ,,
,, इकारायै ,,
,, उकारायै ,,
,, ऐकाररूपिण्यै ,,

४०६. ॐ ह्रींकार्यै स्वाहा
,, बीजरूपायै ,,
,, क्लीङ्कारायै ,,
,, अम्बरवासिन्यै ,,
सर्वाक्षरमय्यै शक्त्यै ,,

४११. ॐ अक्षरायै स्वाहा
„ वर्णमालिन्यै „
सिन्दूरारुणवक्त्रायै „
सिन्दूरतिलकप्रियायै „
„ वश्यायै „
„ वश्यबीजायै „
लोकवश्यविभाविन्यै „
„ नृपवश्यायै „
„ नृपैःसेव्यायै „
४२०. „ नृपवश्यकर्यै „

४२१. ॐ प्रियायै स्वाहा
„ महिष्यै „
„ नृपमान्यायै „
„ नृमान्यायै „
„ नृपनन्दिन्यै „
„ नृपधर्ममय्यै „
„ धन्यायै „
„ धनधान्यविवर्द्धिन्यै
„ चतुर्वर्णमय्यै मूर्त्यै
४३०. „ चतुर्वर्णैःपूजितायै „

४३१.	ॐ सर्वधर्ममय्यै सिद्धये		४४१.	ॐ अस्त्रशस्त्रमय्यै विद्यायै	
	,, चतुराश्रमवासिन्यै			वरशस्त्रास्त्रधारिण्यै	,,
	,, ब्राह्मण्यै	,,		,, सुमेधसे	,,
	,, क्षत्रियायै	,,		,, सत्यमेधसे	,,
	,, वैश्यायै	,,		,, भद्रकाल्यै	,,
	,, शूद्रायै	,,		,, अपराजितायै	,,
	,, अवरवर्णजायै	,,		,, गायत्र्यै	,,
	,, वेदमार्गरतायै	,,		,, सत्कृत्यै	,,
	,, यज्ञायै	,,		,, सन्ध्यायै	,,
४४०.	वेदविश्वविभाविन्यै	,,	४५०.	,, सावित्र्यै	,,

४५१.	ॐ त्रिपदाश्रयायै	स्वाहा	४६१.	ॐ सनातन्यै	स्वाहा
	,, त्रिसन्ध्यायै	,,		,, गर्भाधारधरायै	,,
	,, त्रिपद्यै	,,		,, शून्यायै	,,
	,, धात्र्यै	,,		,, गर्भाशयनिवासिन्यै	,,
	,, सुपर्वायै	,,		,, सुरारिघातिन्यै कृत्यायै	
	,, सामगायिन्यै	,,		,, पूतनायै	,,
	,, पाञ्चाल्यै	,,		,, तिलोत्तमायै	,,
	,, बालिकायै	,,		,, लज्जायै	,,
	,, बालायै	,,		,, रसवत्यै	,,
४६०.	,, बालक्रीडायै	,,	४७०.	,, नन्दायै	,,

४७१. ॐ भवान्यै स्वाहा
" पापनाशिन्यै "
" पट्टामबरधरायै "
" गीत्यै "
" सुगीत्यै "
" ज्ञानलोचनायै "
सप्तस्वरमय्यै तन्त्र्यै "
षड्जमध्यमधैवतायै "
मूर्च्छनायै ग्रामसंस्थानायै
४८०. " स्वस्थायै

४८१. ॐ स्वस्थानवासिन्यै स्वाहा
" अट्टाट्टहासिन्यै "
" प्रेतायै "
" प्रेतासननिवासिन्यै "
" नृत्तगीतप्रियायै "
" अकामायै "
" तुष्टिदायै "
" पुष्टिदायै "
" अक्षयायै "
४९०. " निष्ठायै "

४९१. ॐ सत्यप्रियायै स्वाहा	ॐ ज्वालिन्यै स्वाहा
,, प्रज्ञायै ,,	,, ज्वालायै ,,
,, लोकेश्यै ,,	विषमोहार्त्तिनाशिन्यै ,,
,, सुरोत्तमायै ,,	,, विषारये ,,
,, सविषायै ,,	

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिंधुं दुरितात्यग्निः।

ॐ नागदमन्यै स्वाहा ॥५००॥

प्रातःकाले कुमारी कुमुदकलिकया जप्यमालां जपन्ती मध्याह्ने प्रौढरूपा विकसितवदना चारुनेत्रा विशाला। सन्ध्यायां वृद्धरूपा गलितकुचयुगे मुण्डमालां वहन्ती सा देवी दिव्यदेहा हरिहरनमिता पातु नो ह्यादिमुद्रा।

Skt

५०१. ॐ कुरुकुल्लायै स्वाहा ५०६. ॐ राक्षस्यै स्वाहा
" अमृतोद्भवायै " " रात्र्यै "
भूतभीतिहरायै रक्षायै " " दीर्घनिद्रायै "
भूतावेशविनाशिन्यै " " दिवागत्यै "
" रक्षोघ्न्यै " " चन्द्रिकायै "

५११. ॐ चन्द्रकान्तये स्वाहा
„ सूर्यकान्तये „
„ निशाचर्यै „
„ डाकिन्यै „
„ शाकिन्यै „
„ शिष्यायै „
„ हाकिन्यै „
„ चक्रवाकिन्यै „
सितासितप्रियायै „
५२०. स्वङ्गायै „

५२१. ॐ सकलायै स्वाहा
„ वनदेवतायै „
„ गुरुरूपधरायै „
„ गुर्व्यै „
„ मृत्यवै „
„ मार्यै „
„ विशारदायै „
„ महामायै „
„ विनिद्रायै „
५३० तन्द्रायै „

५३१. ॐ मृत्युविनाशिन्यै स्वाहा
चन्द्रमण्डलसंकाशायै ,,
चन्द्रमण्डलवासिन्यै ,,
अणिमादिगुणोपेतायै ,,
,, सुस्पृहायै ,,
,, कामरूपिण्यै ,,
,, अष्टसिद्धिप्रदायै ,,
,, प्रौढायै ,,
दुष्टदानवघातिन्यै ,,
५४०. अनादिनिधनायै पुष्टये

५४१. ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा
चतुर्मुख्यै ,,
चतुःसमुद्रशयनायै ,,
चतुर्वर्गफलप्रदायै ,,
काशपुष्पप्रतीकाशायै ,,
शरत्कुमुदलोचनायै ,,
,, भूतायै ,,
,, भव्यायै ,,
,, भविष्यायै ,,
५५०. ,, शैलजायै ,,

५५१. ॐ शैलवासिन्यै स्वाहा
" वाममार्गरतायै "
" वामायै "
" शिवमाङ्कवासिन्यै "
" वामाचारप्रियायै
" तुष्टायै "
" लोपामुद्रायै "
" प्रबोधिन्यै "
" भूतात्मने "
५६०. " परमात्मने "

५६१. ॐ भूतभावविभाविन्यै
" मङ्गलायै "
" सुशीलायै "
" परमार्थप्रबोधिकायै
" दक्षिणायै "
" दक्षिणामूर्त्तये "
" सुदक्षिणायै "
" हरिप्रियायै "
" योगिन्यै "
५७०. " योगयुक्तायै

५७१. ॐ योगाङ्गायै स्वाहा
" ध्यानशालिन्यै "
" योगपट्टधरायै "
" मुक्तायै "
मुक्तानांपरमायै गत्यै "
" नारासिंह्यै "
" सुजन्मने "
" त्रिवर्गफलदायिन्यै "
" धर्मदायै "
५८०. " धनदायै "

५८१. ॐ कामदायै स्वाहा
" मोक्षदायै "
" द्युतये "
" साक्षिण्यै "
" क्षणदायै "
" दक्षायै "
" दक्षजायै "
" कोटिरूपिण्यै "
" क्रतवे "
५९०. " कात्यायन्यै "

५९१. ॐ स्वच्छायै स्वाहा
" स्वच्छन्दायै "
" कविप्रियायै "
" सत्यागमायै "
" बहिःस्थायै "

५९६. ॐ काव्यशक्तये स्वाहा
" कवित्वदायै "
" मेनापुत्र्यै "
" सत्यै मात्रे "

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम् सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽति-दुर्गाणि विश्वा नावेव सिधु दुरितात्यग्निः ॐ मैनाकभगिन्यै स्वाहा ॥६००॥

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणामिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः। तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमकुट-नीराजितपदाम् ॥

६०१. ॐ तडिते स्वाहा		६०६. ॐ सौभाग्यदायिन्यै स्वाहा	
" सौदामिन्यै	"	" दिवे	"
" स्वधाम्ने	"	" सुभगायै	"
" सुधाम्ने	"	" द्युतिवर्द्धिन्यै	"
" धामशालिन्यै	"	" श्रियै	"

६११. ॐ कृत्तिवसनायै स्वाहा
" कङ्कालयै "
" कलिनाशिन्यै "
रक्तबीजवधोद्दृप्तायै "
" सुतन्तवे "
" बीजसन्तत्यै "
" जगज्जीवायै "
" जगद्बीजायै "
" जगत्त्रयहितैषिण्यै "
६२०. " चामीकररुचये "

६२१. ॐचान्द्रयै-तस्यै-अक्षयायै-षोडश्यै-कलायै स्वाहा
" यत्तत्पदानुबन्धायै "
" यक्षिण्यै "
" धनदार्चितायै "
" चित्रिण्यै "
" चित्रमायायै "
" विचित्रायै "
" भुवनेश्वर्यै "
" चामुण्डायै "
६३०. मुण्डहस्तायै "

६३१. ॐ चण्डमुण्डवधोद्धुरायै स्वाहा
" अष्टम्यै "
" एकादश्यै "
" पूर्णायै "
" नवम्यै "
" चतुर्दश्यै "
" अमायै "
" कलशहस्तायै "
" पूर्णकुम्भधरायै "
६४०. " धरायै "

६४१. ॐ अभीरवे स्वाहा
" भैरव्यै "
" भीमायै "
" भीरायै "
" त्रिपुरभैरव्यै "
" महारुण्डायै "
" रौद्र्यै "
" महाभैरवपूजितायै "
" निर्मुण्डायै "
६५०. " हस्तिन्यै "

६५१. ॐ चण्डायै स्वाहा
" करालदशनाननायै "
" करालायै "
" विकरालायै "
" घोरघुर्घुरनादिन्यै "
" रक्तदन्तायै "
" ऊर्ध्वकेश्यै "
" बन्धूककुसुमारुणायै "
" कादम्बर्यै "
६६०. " पटासायै "

६६१. ॐ काश्मीर्यै स्वाहा
" कुङ्कुमप्रियायै "
" क्षान्त्यै "
" बहुसुवर्णायै "
" रत्यै "
" बहुसुवर्णदायै "
" मातङ्गिन्यै "
" वरारोहायै "
" मत्तमातङ्गगामिन्यै "
६७०. " हंसायै "

६७१. ॐ हंसगत्यै स्वाहा
" हंस्यै "
" हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै "
" पूर्णचन्द्रमुख्यै "
" श्यामायै "
" स्मितास्यायै "
" श्यामकुण्डलायै "
" मष्यै "
" लेखन्यै "
६८०. " लेख्यायै "

६८१. ॐ सुलेखायै स्वाहा
" लेखकप्रियायै "
" शङ्खिन्यै "
" शङ्खहस्तायै "
" जलस्थायै "
" जलदेवतायै "
" कुरुक्षेत्रावनये "
" काश्यै "
" मथुरायै "
६९०. " काञ्च्यै "

६९१. ॐ अवन्तिकायै स्वाहा
,, अयोध्यायै ,,
,, द्वारकायै ,,
,, मायायै ,,
,, तीर्थायै ,,

६९६. ॐ तीर्थकरप्रियायै स्वाहा
,, त्रिपुष्करायै ,,
,, अप्रमेयायै ,,
,, कोशस्थायै ,,

जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः ।
स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव दुरितात्यग्निः
ॐ कोशवासिन्यै स्वाहा ॥७००॥

मुक्ताहारलसत्किरीटरुचिरां पूर्णेन्दुवक्त्रप्रभाम्
शिञ्जन्नूपुरकिङ्किणीमणिधरां पद्मप्रभाभासुराम् ।
सर्वाभीष्टफलप्रदां गिरिसुतां वाणीरमासेविताम्
मीनाक्षीम् प्रणतोऽस्मि संततमहं कारुण्यवारांनिधिम् ॥

७०१. ॐ	कौशिक्यै	स्वाहा	७०६. ॐ	पद्मकोशाक्ष्यै	स्वाहा
,,	कुशावर्तायै	,,	,,	कुसुमायै	,,
,,	कौशाम्ब्यै	,,	,,	कुसुमप्रियायै	,,
,,	कोशवर्द्धिन्यै	,,	,,	तोतुलायै	,,
,,	कोशदायै	,,	,,	तुलाकोटये	,,

७११.	ॐ कूटस्थायै	स्वाहा	७२१.	ॐ महाकोश्यै	स्वाहा
	,, कोटराश्रयायै	,,		,, महावर्तायै	,,
	,, स्वयम्भुवे	,,		,, सदसदात्मिकायै बुद्धये	
	,, सुरूपायै	,,		,, महाग्रहहरायै	,,
	,, स्वरूपायै	,,		,, सौम्यायै	,,
	,, रूपवर्द्धिन्यै	,,		,, विशोकायै	,,
	,, तेजस्विन्यै	,,		,, शोकनाशिन्यै	,,
	,, सुभिक्षायै	,,		,, सात्विक्यै	,,
	,, बलदायै	,,		,, सत्वसंस्थायै	,,
७२०.	,, बलदायिन्यै	,,	७३०.	,, राजस्यै	,,

७३१. ॐ रजोन्नतायै स्वाहा
" तामस्यै "
" तमोयुक्तायै "
" गुणत्रयविभाविन्यै
" अव्यक्तायै "
" व्यक्तरूपायै "
" वेदविद्यायै "
" शाम्भव्यै "
शङ्कराकल्पिन्यै कल्पायै
७४०. मनः सङ्कल्पसन्ततये "

७४१. ॐ सर्वलोकमय्यै शक्तये स्वाहा
" सर्वश्रवणगोचरायै "
" सर्वज्ञानवत्यै वाञ्छायै
" सर्वतत्त्वानुबोधिन्यै "
" जाग्रत्यै "
" सुषुप्तये "
" स्वप्नावस्थायै "
" तुरीयकायै "
" त्वरायै "
७५०. " मंदगत्यै "

७५१. ॐ मन्दायै स्वाहा
मदिरामोदधारिण्यै ,,
,, पानभूमये ,,
,, पानपात्रायै ,,
पानदानकरोद्यतायै ,,
आघूर्णारुणनेत्रायै ,,
किंचिदव्यक्तभाषिण्यै ,,
,, आशापूरायै ,,
,, दीक्षायै ,,
७६०. ,, दक्षायै ,,

७६१. ॐ दीक्षितपूजितायै स्वाहा
,, नागवल्लयै ,,
,, नागकन्यायै ,,
,, भोगिन्यै ,,
,, भोगवल्लभायै ,,
सर्वशास्त्रवत्यै विद्यायै
,, सुस्मृतये ,,
,, धर्मवादिन्यै ,,
,, श्रुत्यै ,,
७७०. ,, श्रुतिधरायै ,,

७७१. ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा
" श्रेष्ठायै "
" पातालवासिन्यै "
" मीमांसायै "
" तर्कविद्यायै "
" सुभक्तये "
" भक्तवत्सलायै "
" सुनाभये "
" यातनायै "
७८०. " जातये "

७८१. ॐ गम्भीरायै स्वाहा
" भाववर्जितायै "
" नागपाशधरायै मूर्त्यै
" अगाधायै "
" नागकुण्डलायै "
" सुचक्रायै "
" चक्रमध्यस्थायै "
चक्रकोणनिवासिन्यै "
सर्वमन्त्रमय्यै विद्यायै
७९०. सर्वमन्त्राक्षरावलये "

७९१. ॐ मधुस्रवायै स्वाहा
" स्रवन्त्यै "
" भ्रामर्यै "
" भ्रमरालकायै "
मातृमण्डलमध्यस्थायै "

७९६. ॐ मातृमण्डलवासिन्यै
" कुमारजनन्यै "
" क्रूरायै "
" सुमुख्यै स्वाहा

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम सोमम ऽरातीयतो निदहाति: वेद: । स न: पर्षदऽति-दुर्गाणि विश्वा नावेव दुरितात्यग्नि: ॐ ज्वरनाशिन्यै स्वाहा ॥८००॥

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमयमणिमादिर्गुणगणः ।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथक्तत्त्वं त्वत्तो भगवति न जानीमह इमे ॥

८०१. ॐ अतीतायै स्वाहा ८०६.ॐ आहारपरिणामिन्यै
„ विद्यमानायै „ „ पञ्चभूतानांनिदानाय
„ भाविन्यै „ „ भवसागरतारिण्यै „
„ प्रीतिमञ्जर्यै „ „ अक्रूरायै „
„ सर्वसौख्यवत्यै युक्त्यै „ ग्रहवत्यै „

८११. ॐ विग्रहायै स्वाहा
" ग्रहवर्जितायै "
" रोहिण्यै "
" भूमिगर्भायै "
" कालभुवे "
" कालवर्तिन्यै "
" कलङ्करहितायै नार्यै "
" चतुष्षष्ट्यभिधावत्यै
" जीर्णायै "
८२०. " जीर्णवस्त्रायै "

८२१. ॐ नूतनायै स्वाहा
" नववल्लभायै "
" अरजसे "
" रतये "
" प्रीतये "
" रतिरागविवर्द्धिन्यै
" भिन्नायै. पंचवातगत्यै
पञ्चश्लेष्माशयायैधरायै
" पञ्चपित्तवत्यै शक्त्यै
८३०. " पञ्चस्थानविबोधिन्यै

८३१. ॐ उदक्यायै स्वाहा
" वृषस्यन्त्यै "
" त्र्यहंबहिःप्रस्रविण्यै
रजःशुक्रधरायै शक्तये
" जरायवे "
" गर्भधारिण्यै "
" त्रिकालज्ञायै "
" त्रिलिङ्गायै "
" त्रिमूर्तये "
८४०. " त्रिपुरवासिन्यै "

८४१. ॐ अरागायै स्वाहा
" शिवतत्त्वायै "
" कामतत्त्वानुरागिण्यै
" प्राच्यै दिशे "
" अवाच्यै दिशे "
" प्रतीच्यै दिशे "
" उदीच्यै दिशे "
" दिशां विदिशे "
" अहङ्कृत्यै "
८५०. " अहङ्कारायै "

८५१. ॐ बलिमायायै स्वाहा
" बलिप्रियायै "
" स्रुचे "
" स्रुवायै "
" सामिधेन्यै "
" सश्रद्धायै "
" श्राद्धदेवतायै "
" मात्रे "
" मातामह्यै "
८६०. " तृप्तये "

८६१. ॐ पितृमात्रे स्वाहा
" पितामह्यै "
" स्नुषायै "
" दौहित्रिण्यै "
" पुत्र्यै "
" पौत्र्यै "
" नप्त्र्यै "
" शिशुप्रियायै "
" स्तनदायै "
८७०. स्तनधारायै "

८७१. ॐ विःवयोनये स्वाहा
" स्तनन्धय्यै "
" शिशूत्सङ्गधरायै "
" दोलायै "
" दोलाक्रीडाभिनन्दिन्यै "
" उर्वश्यै "
" कदल्यै "
" केकायै "
" विशिखायै "
८८०. " शिखिनर्तिन्यै "

८८१. ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा
" खट्वायै "
बाणपुङ्खानुवर्तिन्यै "
" लक्ष्यप्राप्त्यै "
" कलायै "
" अलक्ष्यायै "
" लक्ष्यायै "
" शुभलक्षणायै "
" वर्तिन्यै "
८९०. " सुपथाचारायै "

८९१. ॐ परिखायै स्वाहा
,, खनये ,,
,, वृतये ,,
,, प्राकारवलयायै ,,
,, वेलायै ,,

८९६. ॐ महोदधौमर्यादायै स्वाहा
,, पोषिण्यै शक्त्यै ,,
,, शोषिण्यै शक्त्यै ,,
,, दीर्घकेश्यै ,,

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतिरऽसि धामऽसि जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽति-दुर्गाणि विश्वा नावेव दुरितात्यग्निः। ॐ सुलोमशायै स्वाहा ॥९००॥

यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु ॥

९०१. ॐ ललितायै स्वाहा
,, मांसलायै ,,
,, तन्व्यै ,,
,, वेदवेदाङ्गधारिण्यै ,,
,, नरासृक्पानमत्तायै

९०६. ॐ नरमुण्डास्थिभूषणायै स्वाहा
,, अक्षक्रीडारतये ,,
,, शार्यै ,,
शुकभाषिण्यै शारिकायै
,, शाम्बर्यै ,,

९११. ॐ गारुडयै विद्यायै स्वा०
„ वारुण्यै „
„ वरुणार्चितायै „
„ वाराह्यै „
„ मुण्डहस्तायै „
„ दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरायै „
„ मीनमूर्त्तिधरायै „
„ मूर्त्तायै „
„ वदान्यायै „
९२०. „ प्रतिमाश्रयायै „

९२१. ॐ अमूर्तायै स्वाहा
„ निधिरूपायै „
शुचये सालिग्रामशिलायै
„ स्मृतये „
„ संस्काररूपायै „
„ सुसंस्कारायै „
„ संस्कृतये „
„ प्राकृतायै „
„ देशभाषायै „
९३०. „ गाथायै „

९३१. ॐ गौर्यै स्वाहा
" प्रहेलिकायै "
" इडायै "
" पिङ्गलायै "
" पिङ्गायै "
" सुषुम्नायै "
" सूर्यवाहिन्यै "
" शशिस्रवायै "
" तालुस्थायै "
९४०. ॐ काकिन्यै

९४१. ॐ अमृतजीविन्यै स्वाहा
" अणुरूपायै "
" बृहद्रूपायै "
" लघुरूपायै "
" गुरुस्थिरायै "
" स्थावरायै "
" जङ्गमायै "
" देव्यै "
" कृतकर्मफलप्रदायै "
९५०. " विषयाक्रान्तदेहायै "

९५१.	ॐ निर्विशेषायै स्वाहा	९६१.	ॐ भिन्नायै स्वाहा
	" जितेन्द्रियायै "		कैवल्यदायिन्यै क्षान्त्यै "
	" विश्वरूपायै "		" विविक्तसेविन्यै "
	" चिदानन्दायै "		" प्रज्ञाजनयित्र्यै "
	" परब्रह्मप्रबोधिन्यै "		" बहुश्रुतये "
	" निर्विकारायै "		" निरीहायै "
	" निर्वैरायै "		" समस्तैकस्यै "
	" विरतये "		सर्वलोकैकसेवितायै "
	" सत्यवर्धिन्यै "		" सेवायै "
९६०.	" पुरुषाज्ञायै "	९७०.	" सेवाप्रियायै "

९७१. ॐ सेव्यायै स्वाहा
,, सेवाफलविवर्द्धिन्यै ,,
कलौकल्किप्रियायै काल्यै
दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै ,,
,, प्रत्यञ्चायै ,,
,, धनुर्यष्टये ,,
,, खड्गधारायै ,,
,, दुरानत्यै ,,
,, अश्वप्लुत्यै ,,
९८०. ,, वल्गायै ,,
९८१. ॐ सृणये स्वाहा
,, सन्मत्तवारणायै ,,
,, वीरभुवे ,,
,, वीरमात्रे ,,
,, वीरसुवे ,,
,, वीरनन्दिन्यै ,,
,, जयश्रियै ,,
,, जयदीक्षायै ,,
,, जयदायै ,,
९९०. ,, जयवर्द्धिन्यै ,,

९९१. ॐ सौभाग्यसुभगाकारायै स्वाहा
सर्वसौभाग्यवर्द्धिन्यै ,,
,, क्षेमङ्कर्यै ,,
,, सिद्धिरूपायै ,,

९९५. ॐ सत्कीर्त्तये स्वाहा
,, पथिदेवतायै ,,
सर्वतीर्थमय्यै मूर्त्यै ,,
सर्वदेवमय्यै प्रभायै ,,
सर्वसिद्धिप्रदायै शक्त्यै

तेजोऽसि शुक्रमऽसि ज्योतरऽसि धामाऽसि जातवेदसे सुनवाम सोममऽरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदऽतिदुर्गाणि विश्वा नावेव दुरितात्यग्निः। ॐ सर्वमङ्गलमङ्गलायै स्वाहा ॥१०००॥

अब पृष्ठ ४३, ४४ पर दिए हुए मन्त्र 'माया कुण्डलिनी........कुमारीत्यसि अनेन मन्त्रहोमेन........प्रीयतां प्रीतास्तु' से तर्पण करें और स्वाहाकार सम्पूर्ण करें।

॥ श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रमन्त्रस्य, पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, भुवनेश्वरी शक्तिः, माहेश्वरी कीलकं, गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं शुभफल प्राप्त्यर्थे पाठे विनियोगः ।

करन्यासः—लक्ष्म्यै अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नमः, माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः, वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां नमः, सहस्रनयनायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः, इन्द्राक्षी भगवत्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

षडङ्गन्यासः—लक्ष्म्यै हृदयाय नमः, भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा, माहेश्वर्यै शिखायै वषट्, वज्रहस्तायै कवचाय हुं, सहस्रनयनायै नेत्राभ्यां वौषट्, इन्द्राक्षी भगवत्यै अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्—ॐ इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभाम् । वामे वज्रधरां सव्य-हस्तेऽभयवरप्रदाम् । सहस्रनेत्रां सूर्याभां नानालङ्कारभूषिताम् । प्रसन्नवदनां नित्यामप्स-

रोगणसेविताम् । श्रीदुर्गां सौम्यवदनां पाशाङ्कुशधरां पराम् । त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम् ॥

श्री इन्द्र उवाच :—

इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवता समुदाहृता ।
गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नेति विश्रुता ॥
कात्यायनी महादेवी चन्द्रघण्टा महातपाः ।
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥
नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला ।
अग्निज्वाला रुद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी ॥
मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥
आनन्दा भद्रजानन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ॥

इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्रशक्ति परायणा ।
महिसासुरसंहन्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥
वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधाः विद्या लक्ष्मी सरस्वती ॥
अनन्ता विजया पूर्णा मनस्तोषाऽपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा ॥
शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्धशरीरिणी ॥

—: ० :—

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता । आयुरारोग्यमैश्वर्यमऽक्षयसम्पत्तिकारकम् ॥
क्षयापस्मारकुष्ठादि तापज्वरनिवारकम् । शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्यादिन्धनात् ॥
आवर्तयेत्सहस्रेण लभते वाञ्छितं फलम् । राजा वशमवाप्नोति सत्यमेव न संशयः ॥
लक्षमेकं जपेद्यस्तु साक्षाद्देवीं स पश्यति । त्रिकालं पठते नित्यं धनधान्यांश्च सम्पदा ॥
अर्धरात्रे पठेन्नित्यं मुच्यते व्याधि-बन्धनात् । ऐन्द्रस्तोत्रमिदं पुण्यं जपे तु फलवर्धनम् ॥

विनाशाय तु रोगाणामपमृत्युं हरत्युत । राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं—धनम् ॥
इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममव्ययम् । विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदम् ॥
ईन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥

या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी ।
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी या रक्तबीजाशनी ॥
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा ।
सा देवी नवकोटिमूर्तिसहिता मां पातु माहेश्वरी ॥
जप्तं पापहरं नुतं बलकरं सम्पूजितं श्रीकरं ।
ध्यातं मानकरं स्तुतं धनकरं सम्भाषितं सिद्धिदम् ॥
गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते ते पादपद्मद्वयं ।
भक्तानां भवभीतिभञ्जनकरं सिद्धचण्टदं पातु नः ॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी ।
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी ।।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ।
ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि ।।
अनेन मन्त्रपाठेन आत्मनो वाङ्मनः............
............सायुधा सांगा प्रीयतां प्रीतास्तु ।।

।। इति श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

॥ श्री गौरीस्तुतिः ॥

ॐ लीलारब्धस्थापितलुप्ताखिललोकां
लोकातीतैर्योगिभिरन्तर्हृदिमृग्याम् ।
बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जां
गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥१॥

आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोजध्यानपराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीमीशार्धाङ्गहरां तां तनुमध्यां गौरीम्० ॥२॥

प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां
नित्यं चित्ते निर्वृतिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तनुरूपां गौरीम्० ॥३॥

चन्द्रापीडानन्दितमन्दस्मितवक्त्रीं
चन्द्रापीडालंकृतलोलालकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्राभ्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां गौरीम्० ॥४॥

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां गौरीम्० ॥५॥

मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां तामभिवन्द्यां गौरीम्० ॥६॥

आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं
भूते भूते भूतकदम्बं प्रसवित्रीम् ।
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां गौरीम्० ॥७॥

यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं
भूयो भूयः प्रादुरभूदक्षतमेव ।
भर्तासार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं गौरीम्० ॥८॥

यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्वत्क्वापि चरं चाप्यचरं च ।
तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां गौरीम्० ॥९॥

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राणक्रीडनशीलां शिवपत्नीं गौरीम्० ॥१०॥

पूजाकाले भावविशुद्धिं विदधानो
भक्त्या नित्यं जलपति गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिमुच्चैः शिवभक्ति
तस्यावश्यं पर्वतपुत्री विदधाति ॥११॥

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
7	1	तया	तस्या
28	10	अष्टसिद्ध	अष्ट सिद्धि
29	6	विनि	विनी
30	6	सत्यागया	सत्यागमा
31	9	मैरवी	भैरवी
36	4	परिणमिनी	परिणामिनी
43	2	शम्भवी	शाम्भवी
43	4	कूमारी	कुमारी
44	5	नन्दिकेम्वर	नन्दिकेश्वर
97	5	दोलाक्रीडाभिननदिन्यै	दौलाक्रीडाभिनन्दिन्यै

—o—